षष्टम् अध्याय

# काशी ग्रामीण बैंक की संरचना

# काशी ग्रामीण बैंक की संरचना

भारत में प्रमुख बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद उपेक्षित क्षेत्रों के विकास के लिए रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा अग्रणी बैंक योजना शुरू की गयी। यह योजना 1969 में स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, उसके सहयोगी बैंकों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों एवं तीन निजी क्षेत्र के बैंकों के लिए प्रारम्भ की गयी।[1]

भारत सरकार ने 3 फरवरी 1969 को श्री आर0 जी0 सरैया की अध्यक्षता में बैंकिंग आयोग की नियुक्ति की। इस आयोग ने ग्रामीण क्षेत्र में साख विस्तार हेतु सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के पुनर्गठन के साथ ही साथ ''ग्रामीण बैंकों'' की स्थापना का सुझाव दिया। इस आयोग की सिफारिशों के आधार पर सरकार ने श्री एम0नरसिंघम की अध्यक्षता में एक जुलाई 1975 को एक वर्किंग ग्रुप का गठन किया। इस वर्किंग ग्रुप को यह उत्तरदायित्व सौंपा गया कि वह एक ऐसी वित्तीय संस्था की स्थापना के बारे में सुझाव प्रस्तुत करे जो राष्ट्रीयकृत बैंकों की पूरक संस्था हो तथा जो मुख्यत: ग्रामीण विकास के लिए आवश्यक ऋण की पूर्ति कर सके। इस वर्किंग ग्रुप ने सहकारी बैंकों एवं वाणिज्य बैंकों के गुणों से युक्त नवीन संस्था की स्थापना की सिफारिश की। इन्ही सुझावों के आधार पर भारत सरकार ने 26 सितम्बर 1975 को ''क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अध्यादेश 1975'' परित किया।

पूर्वी उत्तर-प्रदेश के गाजीपुर, आजमगढ़, जौनपुर एवं वाराणसी जनपदों के विकास के लिए यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया अग्रणी बैंक (लीड बैंक) की हैसियत से कार्यरत है। मुख्यत: अग्रणी बैंक द्वारा ही क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

---

1 एनुअल रिर्पोट आन ट्रेण्ड एण्ड प्रोग्रेस ऑफ बैंकिग इन इण्डिया, 1973-74, पृ0 42.

प्रायोजित किए जाते है। इस अग्रणी बैंक द्वारा प्रवर्तित काशी ग्रामीण बैंक, भारत सरकार द्वारा क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 के खण्ड 3 और भारतीय गजट भाग-2, खण्ड 3 और उपखण्ड 2 के तहत, 28 जुलाई 1980 को स्थापित किया गया। इस बैंक का कार्यक्षेत्र वाराणसी जनपद सुनिश्चित किया गया है।[1] यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य में प्रवर्तित यह द्वितीय क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक है।

इसके स्थापना के समय इसकी पूँजी 25 लाख रूपये थी। काशी ग्रामीण बैंक को नाबार्ड द्वारा एवं अग्रणी बैंक (यूनियन बैंक) द्वारा पुनर्वित्त प्राप्त होता है। इसकी पूँजी में 50 प्रतिशत केन्द्रीय सरकार, 15 प्रतिशत राज्य सरकार एवं 35 प्रतिशत यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया का हिस्सा है।

काशी ग्रामीण बैंक द्वारा 10 प्रतिशत से 15 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण दिए जाते हैं। इसके द्वारा केवल एक शाखा द्वारा विभेदक ब्याज दर योजना का क्रियान्वयन होता है जिसक ब्याजदर 4 प्रतिशत लिया जाता है।

## काशी ग्रामीण बैंक की व्यवस्थाः

प्रथम- भारत सरकार द्वारा एक चेयरमैन की नियुक्ति होती है, जिसका कार्यकाल तीन वर्ष के लिए होता है।

द्वितीय-काशी ग्रामीण बैंक के 8 निदेशकगण है, जिनमें से तीन भारत सरकार द्वारा, तीन यूनियन बैंक (अग्रणी बैंक) द्वारा तथा दो उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा चयन किये जाते है।

---

1 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक, वाराणसी, 1981, पृ01.

तृतीय- कर्मचारियों का एवं अधिकारियों का कार्यकाल राज्य सरकार के कर्मचारियों के कार्यकाल के आधार पर होता है।

चतुर्थ- काशी ग्रामीण बैंक के कर्मचारियों एवं अधिकारियों का वेतन भी राज्य सरकार के कर्मचारियों, अधिकारियों जैसा है।

पंचम- काशी ग्रामीण बैंक में नियुक्ति के लिए उत्तर प्रदेश का निवासी होना अनिवार्य है।[1]

## काशी ग्रामीण बैंक का उद्देश्य:

काशी ग्रामीण बैंक के निम्नलिखित उद्देश्य है:

प्रथम- दूर-दराज ग्रामीण इलाकों में जहाँ पर बैंकिग सुविधाओं का विकास नही है वहाँ बैंकिंग सुविधाएँ प्रदान करना।

द्वितीय- समाज निर्धनतम परिवारों को आसान शर्तो पर ऋण प्रदान करके सामाजिक एवं आर्थिक उत्थान करना तथा स्वरोजगार के अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराना।

तृतीय- ग्रामीण कृषक, ग्रामीण उद्यमियों, शिक्षित बेरोजगारों, बुनकरों आदि का विकास करना।

चतुर्थ- भूमिहीन जिनके पास साधनों का सर्वथा अभाव है, विशेष छूट के अन्तर्गत रिक्शा, आटो रिक्शा, दुकान, कुक्कुट पालन, मिट्टी के खिलौने बनाने वाले को ऋण देकर उनका सामाजिक एवं आर्थिक विकास करना।

---

1 काशी ग्रामीण बैंक, वाराणसी, वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

पंचम- इसका प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण अंचलों का सर्वांगीण विकास एवं गरीबी रेखा से आम जनता को ऊपर उठाने के साथ-साथ बीस सूत्रीय आर्थिक कार्यक्रमों को पूरा करना है जो कि भूतपूर्व प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी द्वारा प्रतिपादित है।[1]

## ऋण का स्वरूप एवं ऋण सीमायें:

काशी ग्रामीण बैंक द्वारा भिन्न-भिन्न मदों के लिए भिन्न-भिन्न ऋण सीमायें सुनिश्चित है, जिनको क्रमवार निम्नलिखित रूपों में देखा जा सकता है:

**कृषि फसली ऋण-** यह ऋण ग्रामीण कृषकों को कम से कम कृषि करने वालों को भी दिया जाता है, जिससे लघु एवं सीमान्त कृषक अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर सके। इस ऋण के अन्तर्गत एक सौ रूपये से लेकर 10,000 रूपये तक दिया जाता है एवं इसकी वसूली फसल के कट जाने के बाद होती है। यह आसान किश्तों में होती है। यह शाखा स्तर तक दिया जाता है।

**मियादी कृषि ऋण-** यह ऋण पम्पिंगसेट, कृषि यन्त्रों की खरीद, ट्रैक्टर, कल्टीवेटर, बोने का यन्त्र, थ्रेसर, गन्ना पेराई मशीन, डीजल इंजन इत्यादि के लिए दिया जाता है। इसकी ऋण सीमा 2 लाख रूपये तक है। इसके लिए 5 प्रतिशत से 15 प्रतिशत तक अग्रिम के रूप में जमा कराया जाता है और 10 प्रतिशत वार्षिक से 15 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर लिया जाता हैं। यह कई आसान किश्तों मे देय होता है।

---

1 काशी ग्रामीण बैंक, वाराणसी, वार्षिक प्रतिवेदन के आधार पर।

**लघु उद्योग-** लघु उद्योग के लिए 62,500 रूपये तक ऋण प्रदान किया जाता है जो 10 प्रतिशत वार्षिक से 15 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर पर दिया जाता है। इसके अन्तर्गत, समस्त ग्रामीण उद्योग एवं कुटीर उद्योग आते है। 15000 रूपये न्यूनतम ऋण है।

**डेयरी उद्योग-** डेयरी उद्योग में गाय पालन एवं भैंस पालन पर 50,000 रूपये तक ऋण प्रदान किया जाता है। इस ऋण की अदायगी भी 10 प्रतिशत से 15 प्रतिशत वार्षिक ब्याज दर से आसान किश्तों में की जाती है। मुर्गी पालन, मछली पालन इत्यादि पर 25,000 रूपये का ऋण दिया जाता है।

**वैयक्तिक व्यवसाय-** इस व्यवसाय के अन्तर्गत ग्रामीण दस्तकार, परिवहन चालक, स्वनियोजित व्यवसायी एवं लघु व्यवसायी आते हैं, जिसमें छोटे-छोटे परिवहन चालकों को ऋण प्रदान किया जाता है।

लघु व्यवसाय में बाजार से खरीदकर लायी गयी वस्तुओं, परचून की दुकान, लोहा, बर्तन की दुकान, लकड़ी के खिलौने की दुकान इत्यादि पर 15,000 रूपये से 25,000 रूपये तक ऋण दिये जाते है।[1]

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट है कि काशी ग्रामीण बैंक उन लोगों को भी ऋण प्रदान करता है, जिन्हें अन्य संस्थायें या तो ऋण देने में सक्षम नही है या उनको ऋण देना स्वीकार ही नहीं होता।

## शाखा विस्तार:

स्थापना वर्ष 1980 के 5 माह और कुछ दिन की कार्यविधि में दो शाखायें खोली गयी।

---

1 काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी के अभिलेखानुसार ।

वर्ष 1981 के पूर्वार्द्ध में काशी ग्रामीण बैंक ने 4 शाखायें खोली और उत्तरार्द्ध में 14 शाखायें खोली जिससे शाखाओं की कुल संख्या 20 हो गयी। वर्ष 1981 के शाखा विस्तार की महत्वपूर्ण उपलब्धि इस बात से ज्ञात होती है कि विकास की सम्भावनाओं से परिपूर्ण, किन्तु प्रभावी बैंकिंग की सुविधाओं से रहित सेवापुरी विकास खण्ड में थोड़े समय के अन्तराल पर 3 शाखायें खोली गयी तथा इस क्षेत्र की विकासोन्मुखी सम्भावनाओं को देखकर तथा उसको ध्यान में रखकर कुछ और शाखायें भी खोली गयी। तदोपरान्त एक शाखा नौगढ़ में खोली गयी जो वाराणसी जनपद का दुरूहतम, अत्यन्त निर्धन तथा साधन विहीन लोगों से भरा क्षेत्र है। कुल मिलाकर काशी ग्रामीण बैंक 1981 तक जनपद वाराणसी के 22 विकास खण्डों में से 17 में शाखायें खोल चुका है।[1]

बैंक अपनी शाखाओं द्वारा ग्रामीण कमजोर वर्ग के लोगों, जैसे- छोटे एवं सीमान्त कृषकों, भूमिहीन मजदूरों, लघु-कुटीर उद्योगों, ग्रामीण शिल्पकारों, बुनकरों, फुटकर परचून के दुकानदारों, छोटे व्यापारियों एवं स्वयं नियोजित जनों के उत्पादन के लिए अपेक्षाकृत कम मूल्य पर वित्तिय सहायता तक पहुँचा सका है।[2]

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तथा सफल एवं त्वरित गति से विभिन्न कार्यक्रमों द्वारा लाभार्थियों को लाभ पहुँचाने के लिए यह आवश्यक है कि बैंक की शाखाओं की संख्या अधिक हो। काशी ग्रामीण बैंक ने शाखायें वही खोली है जो क्षेत्र बैंक सुविधारहित है। स्टॉफ की न्यूनता के कारण पहले शाखा प्रसार के कार्यक्रम में न्यूनता रही और सितम्बर 1982 तक काशी ग्रामीण बैंक

---

1 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी, 1981, पृ0 1-2.

2 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी, 1982, पृ0 1.

केवल 12 शाखायें ही खोल सका। जैसे ही नियुक्ति एवं प्रशिक्षण का दूसरा चरण पूरा हुआ और अधिकारियों एवं क्षेत्र पर्यवेक्षकों की संख्या में वृद्धि हुई, शाखा प्रसार को गति मिली। परिणामत: केवल दिसम्बर 1982 में 8 शाखायें खोलकर 1982 के लक्ष्य को पूरा कर लिया तथा भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा प्राप्त सभी लाइसेंस 31 दिसम्बर 1982 तक काम में आ गये तथा 1982 में शाखाओं की संख्या 20 से बढ़कर 40 हो गयी। इस प्रकार जनपद की सभी तहसीलों में बैंक ने शाखायें खोलकर अपनी कार्य कुशलता का परिचय दिया।[1]

काशी ग्रामीण बैंक ने 1983 वर्ष के दौरान प्रगति की सन्तुलित गति को कायम रखा। वर्ष 1983 में बैंक के कार्य एवं व्यापार में उत्साहवर्द्धक परिणाम प्राप्त हुए। इस वर्ष के दौरान काशी ग्रामीण बैंक को 24 नयी शाखायें खोलने का अनुज्ञापत्र प्राप्त हुआ। इसमें से 17 अनुज्ञापत्र बैंक को वर्ष 1983 को अन्तिम दो माह में प्राप्त हुए। सीमित श्रम शक्ति एवं अन्य प्रमुख कठिनाइयों के बावजूद बैंक ने 1983 को अन्तिम तक 16 नयी शाखाओं का शुभारम्भ किया। 1983 तक जनपद में कार्यरत अन्य व्यावसायिक बैंकों की तुलना में काशी ग्रामीण बैंक सर्वाधिक शाखाओं (56) के माध्यम से सेवारत रहा, जबकि 1982 में 40 शाखायें थी।[2]

वर्ष 1984 के दौरान काशी ग्रामीण बैंक ने 6 और नयी शाखाओं का विस्तार किया जिससे शाखाओं की कुल संख्या 62 हो गयी और सभी तहसील परिक्षेत्रों तथा सम्पूर्ण विकास खण्डों में इसकी शाखायें हो गयी।[3]

---

1 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी, 1982, पृ0 1.

2 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी 1982, पृ0 2.

3 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी 1984, पृ0 3.

वर्ष 1985 के दौरान वर्ष 1984 में खोली गयी 6 शाखाओं के विपरीत, 17 नयी शाखाओं के साथ कुल 79 शाखायें जनपद के समस्त तहसीलों एवं विकास खण्डों में कार्यरत रही।[1]

काशी ग्रामीण बैंक द्वारा सन् 1985 के बाद कोई शाखा नही खोली गयी है। वर्ष 1995 में काशी ग्रामीण बैंक की शाखाओं का ब्लाकवार एवं दिनांक सहित विवरण निम्नलिखित सारणी संख्या द्वारा दिखाया गया है:

सारणी-6.1: काशी ग्रामीण बैंक की शाखाओं का विवरण

| क्रम सं0 | दिनांक | विकास खण्ड | शाखा का नाम |
|---|---|---|---|
| 1. | 28-07-80 | काशी विद्यापीठ | मुख्य शाखा |
| 2. | 30-12-80 | आराजीलाइन | शांहशांहपुर |
| 3. | 16-01-81 | चिरईगाँव | उमरहाँ |
| 4. | 10-02-81 | औराई | उगापुर |
| 5. | 27-03-81 | नियमताबाद | दुलहीपुर |
| 6. | 29-06-81 | सेवापुरी | बड़ौरा बाजार |
| 7. | 18-07-81 | पिण्डरा | फूलपुर |
| 8. | 25-07-81 | सेवापुरी | हाथी बाजार |
| 9. | 28-07-81 | सेवापुरी | कछवां रोड |
| 10. | 01-08-81 | डीघ | जंगीगंज |
| 11. | 04-08-81 | सुरियावाँ | दुर्गागंज |
| 12. | 07-09-81 | हरहुआ | मीरापुर बसही |
| 13. | 08-09-81 | चहनियाँ | टांडा |
| 14. | 25-09-81 | नौगढ़ | नौगढ़ |

1 वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी 1985, पृ0 3.

| | | | |
|---|---|---|---|
| 15. | 01-10-81 | धानापुर | आवाजापुर |
| 16. | 30-10-81 | ज्ञानपुर | पाली |
| 17. | 08-12-81 | चन्दौली | कॉटा |
| 18. | 23-12-81 | धानापुर | एवती |
| 19. | 28-12-81 | सकलडीहा | सदलपुरा |
| 20. | 29-12-81 | चोलापुर | चोलापुर |
| 21. | 12-02-82 | डीघ | कटरा |
| 22. | 13-03-82 | चहनियाँ | रामगढ़ |
| 23. | 18-03-82 | चकिया | शिकारगंज |
| 24. | 23-03-82 | शहाबगंज | सैदपुर |
| 25. | 30-03-82 | बरहनी | धीना |
| 26. | 31-03-82 | नियमताबाद | अलीनगर |
| 27. | 26-05-82 | सेवापुरी | कालिकाबारा |
| 28. | 29-05-82 | सुरियॉवा | मोढ़ |
| 29. | 14-06-82 | ज्ञानपुर | गोसाई बाजार |
| 30. | 26-07-82 | हरहुआ | आयर |
| 31. | 29-07-82 | चिरईगाँव | जाल्हूपुर |
| 32. | 31-07-82 | काशी विद्यापीठ | चितईपुर |
| 33. | 04-12-82 | चोलापुर | नियारडीह |
| 34. | 18-12-82 | बड़ागाँव | बसनी |
| 35. | 21-12-82 | शहाबगंज | इलिया |
| 36. | 23-12-82 | ज्ञानपुर | भिदिउरा |
| 37. | 27-12-82 | भदोही | ममहर |
| 38. | 29-12-82 | आराजीलाइन | कोरौत बाजार |
| 39. | 30-12-82 | चकिया | उतरौत |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 40. | 30-12-82 | सकलडीहा | धरहरा |
| 41. | 31-03-83 | पिण्डरा | गरथमा |
| 42. | 31-03-83 | हरहुआ | गोसाईपुर |
| 43. | 27-06-83 | ज्ञानपुर | मतेथू |
| 44. | 28-06-83 | चहनियाँ | पपौरा |
| 45. | 26-07-83 | बरहनी | जवरियाबाद |
| 46. | 27-07-83 | बरहनी | अशना |
| 47. | 29-11-83 | चहनियाँ | भोपौली |
| 48. | 03-12-83 | सेवापुरी | रामेश्वर |
| 49. | 06-12-83 | आराजीलाइन | काशीपुर |
| 50. | 11-12-83 | नियमताबाद | पाण्डेयपुर |
| 51. | 17-12-83 | चिरईगाँव | गौराकलाँ |
| 52. | 21-12-83 | धानापुर | हिगुंतर |
| 53. | 29-12-83 | चोलापुर | मुनारी |
| 54. | 30-12-83 | बड़ागाँव | कुँआर |
| 55. | 30-12-83 | औराई | बाबूसराय |
| 56. | 30-12-83 | औराई | जगन्नाथपुर |
| 57. | 29-06-84 | चन्दौली | खरूहूँजा |
| 58. | 30-06-84 | चकिया | पर्वतपुर |
| 59. | 27-07-84 | ज्ञानपुर | रोही |
| 60. | 30-07-84 | आराजीलाइन | कृष्णदत्तपुर |
| 61. | 31-12-84 | धानापुर | डबरीया |
| 62. | 31-12-84 | सुरीयावां | अभिया |
| 63. | 16-01-85 | सकलडीहा | बरठी |
| 64. | 20-02-85 | चोलापुर | बेला |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 65. | 23-02-85 | सुरीयावां | करीयॉव |
| 66. | 25-02-85 | सुरीयावां | हरिहरिपुर |
| 67. | 27-02-85 | काशी विद्यापीठ | कोरौता |
| 68. | 28-02-85 | काशी विद्यापीठ | बच्छॉव |
| 69. | 11-03-85 | हरहुआ | सभईपुर |
| 70. | 14-03-85 | चन्दौली | जगदीशसराय |
| 71. | 22-03-85 | औराई | गिर्दबड़गॉव |
| 72. | 25-03-85 | भदोही | सरोई |
| 73. | 25-03-85 | भदोही | भत्तूपुर |
| 74. | 27-03-85 | चन्दौली | धरौली |
| 75. | 28-03-85 | सुरीयॉवा | अभोली |
| 76. | 29-03-85 | सुरीयॉवा | रामनगर |
| 77. | 29-09-85 | बड़ागॉव | बिरॉवकोट |
| 78. | 30-09-85 | बड़ागॉव | नईबाजार |
| 79. | 30-09-85 | बड़ागॉव | मझगाई |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी द्वारा प्राप्त अभिलेखों के आधार पर। 15वॉं वार्षिक प्रतिवेदनानुसार, काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी, मार्च 1995.

## कर्मचारियों की संख्या:

काशी ग्रामीण बैंक की स्थापना के बाद वर्ष 1980 तक कर्मचारियों की कुल संख्या 7 थी, जो प्रतिनियुक्ति पर के कर्मचारी थे।

वर्ष 1981 में काशी ग्रामीण बैंक के कर्मचारियों की संख्या निम्न सारणी से प्रकट की जा सकती है:

सारणी-6.2: काशी ग्रामीण बैंक के कर्मचारियों का विवरण

(1981 के आधार पर)

| क्रम सं0 | संवर्ग | प्रतिनियुक्ति | बैंक के | योग |
|---|---|---|---|---|
| 1. | अधिकारी | 9 | 20 | 29 |
| 2. | क्षेत्र पर्यवेक्षक | - | 28 | 28 |
| 3. | लिपिक | 7 | 27 | 34 |
| | योग | 16 | 75 | 91 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी के अभिलेखानुसार।

1981 के पश्चात् इस बैंक के कर्मचारियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। मार्च 1992 तक कर्मचारियों की संख्या बढ़कर 376 हो गयी है। मार्च 1993 तक कर्मचारियों की संख्या 376 रही लेकिन वर्ष 1994 में संख्या 374 हो गयी। मार्च 1995 में कर्मचारियों की संख्या 374 रही। इसे हम निम्न सारणी से स्पष्ट करते है।

सारणी-6.3: कर्मचारी गण (1995 के आधार पर)

| *क्रम सं0* | *श्रेणी* | *प्रतिनियुक्ति* | *बैंक के* | *योग* |
|---|---|---|---|---|
| 1. | अध्यक्ष | 1 | – | 1 |
| 2. | महाप्रबन्धक | 1 | – | 1 |
| 3. | वरिष्ठ प्रबन्धक | 1 | 7 | 8 |
| 4. | अधिकारी | 2 | 110 | 112 |
| 5. | क्षेत्रीय पर्यवेक्षक | – | 60 | 60 |
| 6. | लिपिक/खजांची | – | 109 | 109 |
| 7. | पत्रवाहक/चालक | – | 83 | 83 |
| | योग | 5 | 369 | 374 |

स्रोत- 15 वाँ वार्षिक प्रतिवेदनानुसार काशी ग्रामीण बैंक, मार्च 1995, पृ0 10.

निम्न सारणी से हम कर्मचारियों की वर्षवार संख्या दर्शाते है:

सारणी-6.4: कर्मचारियों की संख्या वर्षवार

| वर्ष | प्रतिनियुक्ति पर | ग्रामीण बैंक का |
|---|---|---|
| मार्च 1987 | 5 | 266 |
| मार्च 1989 | 6 | 324 |
| मार्च 1990 | 4 | 361 |
| मार्च 1991 | 7 | 375 |
| मार्च 1992 | 5 | 371 |
| मार्च 1993 | 4 | 372 |
| मार्च 1994 | 4 | 370 |
| मार्च 1995 | 5 | 369 |

स्रोत- 12वाँ तथा 15वाँ वार्षिक प्रतिवेदन, काशी ग्रामीण बैंक, वाराणसी, मार्च 1992, मार्च 1995.

## काशी ग्रामीण बैंक निधि के साधनः

काशी ग्रामीण बैंक के निधि तीन स्रोतों से प्राप्त होते है।

1. स्वयं की निधि
2. बैंक की जमाराशि
3. अन्य बैंकिंग एवं वित्तिय संस्थाओं से प्राप्त ऋण।

## 1. स्वयं की निधिः

बैंक के स्वयं की निधि को दो वर्गो में बॉट सकते है-

(क) अंश पूँजी, (ख) प्रारक्षित निधि।

(क) अंश पूँजी- क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक अधिनियम, 1976 के अनुसार काशी ग्रामीण बैंक की अधिकृत पूँजी एक करोड़ रूपये है जो एक लाख शेयरों में विभाजित है तथा प्रत्येक शेयर 100 रूपये का है। अधिनियम के अनुसार अधिकृत पूँजी केन्द्रीय सरकार द्वारा भारतीय रिजर्व बैंक और प्रायोजित बैंक के सलाह पर घटाया या बढ़ाया जा सकता है, परन्तु किसी भी दशा में यह 25 लाख रूपये से कम नहीं हो सकता तथा प्रत्येक अंश 100 रूपये का होगा। बैंक की चुकता पूँजी 25 लाख रूपये है। विगत वर्षो में इस राशि में वृद्धि हुई है। काशी ग्रामीण बैंक के अंश पूँजी को सारणी में दर्शाया गया है-

सारणी-6.5: काशी ग्रामीण बैंक: अंश पूँजी (राशि लाख रूपये में)

| वर्ष | अधिकृत पूँजी | चुकता पूँजी |
|---|---|---|
| 1980 | 100 | 25 |
| 1981 | 100 | 25 |
| 1982 | 100 | 25 |
| 1983 | 100 | 25 |
| 1984 | 100 | 25 |
| 1985 | 100 | 25 |
| 1986 | 100 | 46.25 |
| 1987 | 100 | 50 |
| 1988 | 100 | 50 |
| 1989 | 100 | 50 |
| 1990 | 100 | 50 |
| 1991 | 100 | 50 |
| 1992 | 100 | 50 |
| 1993 | 500 | 62.50 |
| 1994 | 500 | 75.00 |
| 1995 | 500 | 75.00 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक वाराणसी, वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

सारणी से स्पष्ट है कि बैंक की चुकता पूँजी स्थापना वर्ष से वर्ष 1985 तक 25 लाख रूपये है। बैंक की चुकता पूँजी बढ़कर वर्ष 1986 में 46.25 लाख रूपये तथा पुन: वर्ष 1987 में बढ़कर 50 लाख रूपये हो गयी। फिर वर्ष 1993 में अधिकृत पूँजी बढ़कर 500 लाख रूपये हो गया और चुकता पूँजी बढ़कर 75 लाख रूपये हो गया और वर्ष 1995 में भी चुकता पूँजी 75 लाख रूपये रहा।

(ख) **प्रारक्षित पूँजी**- अन्य बैंकिंग संस्थाओं की तरह काशी ग्रामीण बैंक की प्रारक्षित निधि उसके आन्तरिक वित्तीय साधन का मुख्य भाग है। बैंक की प्रारक्षित निधि को दो भागों में विभाजित किया गया है-

अ. सामान्य प्रारक्षित निधि,

ब. सर्वाधिक प्रारक्षित निधि

काशी ग्रामीण बैंक की प्रारक्षित निधि को सारणी में दर्शाया गया है-

सारणी-6.6: काशी ग्रामीण बैंक की प्रारक्षित निधि (राशि लाख रूपये में)

| वर्ष | सामान्य प्रारक्षित निधि (जनरल रिजर्व फण्ड) | सर्वाधिक प्रारक्षित निधि (स्टेटोरी रिजर्व फण्ड) |
|---|---|---|
| 1980 | 8600 | 34539 |
| 1981 | 8600 | 34539 |
| 1982 | 8600 | 34539 |
| 1983 | 8600 | 34539 |
| 1984 | 32957 | 34539 |
| 1985 | 32957 | 34539 |
| 1986 | 32957 | 34539 |
| 1987 | 32957 | 34539 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक, वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

सारणी से स्पष्ट है कि बैंक की सामान्य प्रारक्षित निधि में वृद्धि हुई है जबकि सर्वाधिक प्रारक्षित निधि में स्थापना वर्ष के बाद से 1987 तक कोई वृद्धि नहीं हुई है।

## (2) काशी ग्रामीण बैंक की जमा राशि:

जमा बैंकिंग संस्था के आन्तरिक साधन के मुख्य स्रोत हैं। ग्रामीण क्षेत्र में क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा स्थानीय लोगों से जमा राशि जुटायी जाती है। इससे एक ओर बैंक की आन्तरिक स्थिति मजबूत होती है तथा दूसरी ओर स्थानीय लोगों को बैंकिंग के लाभ प्राप्त होते है। काशी ग्रामीण बैंक विभिन्न

जमा योजनाओं द्वारा ग्रामीण बचत को आकर्षित करके अपने साधनों में वृद्धि करता है।

परम्परागत रूप से बैंक तीन प्रकार के जमाराशि स्वीकार करते है-

(क) चालू जमा, (ख) बचत जमा और (ग) सावधि जमा

क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा बचत जमा खाते एवं निश्चित अवधि के लिए सावधि जमा खाते खोले जाते है, चालू जमा खाते को कोई विशेष महत्व नहीं दिया जाता है।

## बचत खाता:

निम्न एवं मध्यम आय वर्ग की बचत क्षमता अधिक नहीं होती है, परन्तु इन छोटी-छोटी बचतों का अत्यधिक महत्व है। अत: निम्न एवं मध्यम आय वर्ग की बचत को संकलित करने एवं इन वर्गों में बचत की आदत को प्रोत्साहन प्रदान करने के उद्देश्य से काशी ग्रामीण बैंक द्वारा बचत जमा खाता खोले जाते है।

## सावधि जमा खाता:

सावधि जमा, वे जमा होती है जो एक निश्चित अवधि के लिए बैंकों के पास रखी जाती है। सावधि जमा में यह पहले से ही ज्ञात रहता है कि इन जमा राशियों का भुगतान कब करना है। इस कारण इन जमा राशियों के विरूद्ध बैंकों को कम तरल राशि रखनी पड़ती है एवं इस जमा राशि का उपयोग बैंक लाभ अर्जन के उद्देश्य से काम में ले सकते है। इस कारण इस जमा योजना पर अन्य जमा योजना की तुलना में बैंकों द्वारा अधिक ब्याज

दिया जाता है। काशी ग्रामीण बैंक में विभिन्न समयावधि के लिए जमाधन पर भिन्न-भिन्न ब्याज दर की सुविधा उपलब्ध है।

## जमा पुनर्निवेश प्रमाण पत्र:

इस योजना में एक निश्चित धनराशि का प्रमाण पत्र दिया जाता है। प्रमाण पत्र को 6 वर्षो में भुनाने पर लगभग दूनी रकम प्रदान की जाती है।

## संचयी जमा:

समाज में जिन व्यक्तियों की बचत क्षमता कम होती है उन्हें प्रोत्साहन प्रदान करने की दृष्टि से संचयी जमा खाते खोले जाते हैं। इस प्रकार की जमा राशि संचयी होती है तथा निश्चित अवधि के पश्चात् आकर्षक ब्याज दर सहित भुगतान प्रदान किया जाता है।

काशी ग्रामीण बैंक के सभी तरह के जमा को हम निम्न सारणी से स्पष्ट करते है:

**सारणी-6.7 काशी ग्रामीण बैंक की जमा राशियाँ (राशि लाख रूपये में)**

| वर्ष | बचत खाता (जमा) | सावधि खाता (जमा) | जमा पुनर्निवेश प्रमाण पत्र (जमा) | संचयी (जमा) | अन्य खाता (जमा) | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1980 | – | – | – | – | – | – |
| 1981 | 35.21 | 2.09 | 5.69 | 1.09 | 5.29 | 49.37 |
| 1983 | 207.39 | 12.09 | 56.31 | 10.10 | 24.91 | 310.73 |
| 1986 | 578.41 | 26.43 | 313.20 | 46.13 | 16.17 | 986.34 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 1989 | 1032.34 | 40.03 | 724.01 | 93.16 | 32.04 | 1921.58 |
| 1990 | 1461.82 | 51.00 | 958.84 | 115.87 | 39.29 | 2626.82 |
| 1991 | 1738.99 | 63.70 | 1225.23 | 132.63 | 35.23 | 3195.88 |
| 1992 | 2121.72 | 100.70 | 1650.16 | 142.66 | 47.16 | 4062.40 |
| 1993 | 2379.43 | 162.28 | 2310.27 | 187.44 | 47.24 | 5086.66 |
| 1994 | 3141.39 | 196.74 | 2983.40 | 247.91 | 36.36 | 6605.80 |
| 1995 | 3872.47 | 197.32 | 3727.86 | 353.48 | 54.18 | 8205.31 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक के वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

जमाराशि संरचना के अन्तर्गत यह देखा गया है कि कुल जमाधन में विभिन्न जमा योजनाओं में कितना धन जमा हुआ है। सारणी से स्पष्ट है कि सर्वाधिक धन बचत खाता के अन्तर्गत जमा किया गया है। संचयी जमा में वृद्धि इस बात का द्योतक है कि समाज के कमजोर वर्ग के लोग, जिनकी आय कम है, संचयी जमा खाता खोलकर बचत करने के लिए प्रोत्साहित हुए है। जमा राशि पुनर्निवेश प्रमाणपत्र व संचयी जमा खाता के अन्तर्गत जमाधन में वृद्धि हो रहा है।

## (3) अन्य बैंकिंग एवं वित्तिय संस्थाओं से प्राप्त ऋण:

अन्य बैंकिंग संस्थाओं से प्राप्त ऋण काशी ग्रामीण बैंक के कार्यशील पूँजी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। काशी ग्रामीण बैंक को भारतीय औद्योगिक विकास बैंक द्वारा पुनर्वित्त सुविधा प्राप्त नहीं होता है। बैंक को इस प्रकार का ऋण पुनर्वित्त के रूप में प्रायोजित बैंक तथा नाबार्ड से प्राप्त होता है।

काशी ग्रामीण बैंक का संचालन यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा एवं निर्देशन रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया द्वारा होता है और दोनों ही संस्थायें इस बैंक को पुनर्वित्त प्रदान करती है, जो निम्न सारणी के माध्यम से देखा जा सकता है-

**सारणी-6.8: काशी ग्रामीण बैंक को प्राप्त पुनर्वित्त का विवरण**

**(राशि लाख रूपये में)**

| वर्ष | यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया | | नाबार्ड | | योग |
|---|---|---|---|---|---|
| | साधारण | विनियोजित | साधारण | विनियोजित | |
| 1983 | – | – | – | – | – |
| 1985 | 87.50 | 0.54 | 150.00 | 239.00 | 477.04 |
| 1987 | 42.00 | 0.54 | 122.24 | 401.39 | 566.17 |
| 1990 | 67.00 | 0.54 | 55.51 | 468.91 | 591.96 |
| 1991 | 67.00 | 0.54 | 27.76 | 595.18 | 690.48 |
| 1992 | 28.00 | – | – | 634.01 | 662.01 |
| 1993 | 17.00 | – | – | 655.33 | 672.33 |
| 1994 | 24.00 | – | 60.00 | 693.12 | 753.12 |
| 1995 | 24.00 | योजनान्तर्गत | 43.16 | 814.40 | 881.56 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक के वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1985 में यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया ने साधारण वित्त 87 लाख 50 हजार रूपये दिया और विनियोजित

वित्त के रूप में 54 हजार रूपये दिया। नाबार्ड ने 150 लाख रूपये साधारण वित्त के रूप में और 239 लाख रूपये विनियोजित वित्त के रूप में दिये। कुल प्राप्त पुनर्वित्त 477.04 लाख रूपये हो गया। वर्ष 1987 में प्राप्त पुनर्वित्त 566.17 लाख रूपये हो गया। वर्ष 1990 में कुल 591.96 लाख रूपये पुनर्वित्त के रूप में प्राप्त हुए। वर्ष 1991 में 690.48 लाख रूपयें पुनर्वित्त प्राप्त हुए। वर्ष 1992 में 662.01 लाख रूपये पुनर्वित्त प्राप्त हुए। वर्ष 1993-1994 में क्रमशः 672.33 लाख रूपयें तथा 753.12 लाख रूपये पुनर्वित्त प्राप्त हुए।

वर्ष 1995 में यूनियन बैंक ने साधारण वित्त 24 लाख रूपये दिये। नाबार्ड ने 43 लाख 16 हजार साधारण वित्त तथा 814 लाख 40 हजार विनियोजित वित्त दिये।

## जमा धन राशिः

वर्ष 1980 में काशी ग्रामीण बैंक की स्थापना के बाद से ही जमा धनराशियों में भी काफी वृद्धि हुई है, जो निम्न सारणी से स्पष्ट किया गया है।

**सारणी : 6.9 काशी ग्रामीण बैंक की जमा राशियाँ (लाख रूपये में)**

| वर्ष | खाते | राशियाँ |
|---|---|---|
| 1981 | 6390 | 49.37 |
| 1983 | 34001 | 310.73 |
| 1986 | 96064 | 986.34 |
| 1989 | 141792 | 1921.58 |

| | | |
|---|---|---|
| 1990 | 158638 | 2626.82 |
| 1991 | 173442 | 3195.88 |
| 1992 | 194860 | 4062.40 |
| 1993 | 216327 | 5086.66 |
| 1994 | 235691 | 6605.80 |
| 1995 | 232188 | 8205.31 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक के वार्षिक प्रतिवेदनानुसार।

सारणी से स्पष्ट है कि 1980 में काशी ग्रामीण बैंक की स्थापना के बाद से ही जमा धनराशियों में काफी वृद्धि हुई है। वर्ष 1981 में कुल जमा खातों की संख्या 6390 थी, वही जमा राशियाँ 49 लाख 37 हजार रूपये थी।

वर्ष 1983 में खाता संख्याओं में भारी वृद्धि के साथ जमा राशियों में भी वृद्धि दर्ज की गयी। 34001 खातों में 310 लाख 73 हजार रूपये जमा किये गये, जिसमें 207 लाख 39 हजार बचत खाते में जमा किया गया, जो कुल जमा राशि का 89 प्रतिशत था।

काशी ग्रामीण बैंक ने ग्रामीणों में बचत की आदत एवं मितव्ययिता लाने में काफी सफलता प्राप्त की है, जो इस बात से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1986 के दौरान 96064 खातेदारों की जमा राशियाँ 986.34 लाख रूपये हो गयी जो लक्ष्य से भी अधिक है जिसमें बचत खातेदारों की जमा राशियाँ 986.34 लाख रूपये हो गयी जो लक्ष्य से भी अधिक है जिसमें बचत खातेदारों की कुल राशियाँ 578 लाख 41 हजार रूपये थी।

वर्ष 1989 तक खातों की कुल संख्या 141792 हो गयी जिनकी कुल जमाराशियाँ 1921 लाख 58 हजार हो गयी। वर्ष 1990 तक खातों की संख्या 158638 हो गयी जिनकी कुल जमाराशियाँ 2626 लाख 82 हजार हो गयी। इसी तरह 1992 तक काशी ग्रामीण बैंक की जमा राशियों में उत्तरोत्तर वृद्धि होती गयी। 194860 खातों की कुल जमा राशियाँ 4062 लाख 40 हजार रूपये हो गयी थी। वर्ष 1993 में खातों की कुल संख्या 216327 हो गई जिनकी कुल जमाराशियाँ 5086 लाख 66 हजार रूपये हो गयी। वर्ष 1994 में 235691 खातों की कुल जमा राशियाँ 6605 लाख 80 हजार रूपये हो गयी। जबकि वर्ष 1995 में खातों की संख्या घटकर 232188 हो गयी परन्तु जमाराशियाँ बढ़ी और यह 8205 लाख 31 हजार हो गयी।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि वर्ष 1981 की तुलना में वर्ष 1995 में जहाँ उत्तरोत्तर खातों की संख्या में वृद्धि हुई है वहीं जमाराशियों में भी 1981 की तुलना में 1995 में लगभग 20 गुना की वृद्धि हुई है। यदि इसी प्रकार वृद्धि होती रही तो आश्चर्य नहीं कि यह वाराणसी जनपद की साख व्यवस्था करने के साथ-साथ बचत की भी एकमात्र संस्था होगी।

## काशी ग्रामीण बैंक के अग्रिम राशि:

बैंक के अग्रिमों को निम्न सारणी में दर्शाया जा सकता है

सारणी:6.10 काशी ग्रामीण बैंक के अग्रिम (राशि लाख रूपये में)

| वर्ष | अग्रिम | ऋण जमा अनुपात C.D.R. (%) |
|---|---|---|
| 1980 | 2.05 | 64.00 |
| 1981 | 25.80 | 52.00 |
| 1982 | 91.42 | 61.2 |
| 1983 | 227.92 | 73.0 |
| 1984 | 447.12 | 91.0 |
| 1985 | 737.79 | 105.3 |
| 1986 | 898.90 | 91.13 |
| 1987 | 1202.84 | 88.52 |
| 1988 | एन0ए0 | एन0ए0 |
| 1989 | 1634.25 | 85.00 |
| 1990 | 2037.39 | 78.00 |
| 1991 | 2470.23 | 77.00 |
| 1992 | 2877.22 | 71.00 |
| 1993 | 3015.77 | 59.00 |
| 1994 | 3560.24 | 54.00 |
| 1995 | 4206.39 | 51.00 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक के अभिलेखानुसार।

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट है कि वर्ष 1980 में 2.05 लाख रूपये अग्रीम राशि के रूप मे था और ऋण जमा अनुपात 64.0 प्रतिशत था।

वर्ष 1985 में अग्रीम राशि 737 लाख 79 हजार हो गयी और ऋण जमा अनुपात 105.3 प्रतिशत रहा।

वर्ष 1990 में अग्रीम राशि 2037 लाख और 39 हजार थी और 78.0 प्रतिशत ऋण जमा अनुपात रहा।

वर्ष 1995 में अग्रीम राशि 4206 लाख 39 हजार थी और ऋण जमा अनुपात 51.0 प्रतिशत रहा।

## काशी ग्रामीण बैंक के लाभ हानि का विवरण:

बैंक के व्यवसाय में लाभ हानि का विवरण निम्न सारणी से स्पष्ट किया जा सकता है।

**सारणी:6.11 काशी ग्रामीण बैंक के लाभ-हानि का विवरण**

**(राशि लाख रूपये में)**

| वर्ष | लाभ | हानि |
|---|---|---|
| 1980 | +0.43 | – |
| 1981 | – | – 2.08 |
| 1982 | – | – 6.43 |
| 1983 | – | – 8.63 |
| 1984 | – | – 11.74 |
| 1985 | – | – 12.90 |
| 1986 | – | – 9.99 |
| 1987 | – | – 12.64 |

| | | |
|---|---|---|
| 1988 | - | - 23.06 |
| 1989 | एन.ए. | एन.ए. |
| 1990 | - | - 104.57 |
| 1991 | - | - 110.71 |
| 1992 | - | - 162.96 |
| 1993 | - | - 247.93 |
| 1994 | - | - 233.79 |
| 1995 | - | - 218.31 |

स्रोत- काशी ग्रामीण बैंक के वार्षिक प्रतिवेदनों के आधार पर।

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट हो रहा है कि सन् 1980 में केवल बैंक 43 हजार रूपये लाभ अर्जित किया था, लेकिन अन्य वर्षो में अग्रिमों की बकाया राशि की वसूली में निरन्तर गिरावट से काशी ग्रामीण बैंक 218 लाख 31 हजार के घाटे में चल रहा है।

उपर्युक्त विवेचनों से यह स्पष्ट होता है कि काशी ग्रामीण बैंक की प्रगति अति प्रशंसनीय है, क्योंकि इसकी अधिकतर शाखायें उस क्षेत्र में खोली गयी है जहाँ बैंकिंग सुविधाओं का सर्वथा अभाव रहा है। काशी ग्रामीण बैंक ने शाखा विस्तार के साथ-साथ ग्रामीणों में बचत भावना का भी विकास किया है, क्योंकि इस अवधि के दौरान शाखाओं की वृद्धि के साथ-साथ जमाकर्ताओं की संख्या में भी भारी वृद्धि हुई है। इससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि एवं लघु उद्योगों के साथ-साथ छोटे-छोटे लघु उद्यमियों एवं स्वरोजगार पाने वालों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। वास्तव में प्रगति प्रशंसनीय है और आवश्यकता इस बात की है कि बैंक की और अधिक प्रगति के लिए बैंकिंग शाखाओं का और विस्तार किया जाय, क्योंकि अभी भी कुछ ऐसे क्षेत्र है जहाँ कि बैंकिंग

सुविधाओं का अभाव है। बैंकों में योग्य कर्मचारियों की भर्ती के साथ-साथ निष्ठापूर्ण कर्मचारियों का चयन किया जाना चाहिए क्योंकि यह ग्रामीण बैंक है।

वर्ष 1995 के दौरान रूपये 218.31 लाख की शुद्ध हानि हुई, जबकि पिछले वर्ष 1993-94 की हानि रूपये 233.79 लाख थी। इस प्रकार बढ़ती हुई हानि पर अंकुश लगने के साथ ही पिछले वर्ष की तुलना में रूपये 15.48 लाख की कमी आई है।

हानि के प्रमुख कारणों में स्थापना व्ययों में वृद्धि, संचित हानि के कारण चुकता पूँजी का समाप्त होना, बैंक का उपलब्ध सीमित कार्य क्षेत्र, बैंक में विनियोगों से प्राप्त आय बैंक की ब्यय की अपेक्षा कम होना, मियादी जमा का उच्च अनुपात एवं वसूली प्रमाण पत्रों एवं वाद दायर खातों की संख्या में बढ़ोत्तरी भी हानि के कारण रहे है। गैर लक्ष्य के अग्रिमों के निर्धारित लक्ष्यों को न प्राप्त किया जाना भी अन्य कारण है।

उपरोक्त सभी विषमताओं के बावजूद इस शोचनीय स्थिति से उबरने के पुरजोर प्रयास किये जा रहे है। जिससे उच्च ब्याज दर पर निधियों को विनियोजित करने हेतु नकद साख सुविधा, जमा संग्रहण एवं गैर लक्ष्य समूह में अधिक भागीदारी एवं अधिकाधिक वसूली करने पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। आशा है कि यह बैंक जनपद की अर्थव्यवस्था के विकास में काफी योगदान करेगा।

वाराणसी जनपद के विकास के लिये काशी ग्रामीण बैंक, लघु कृषक, सीमान्त कृषक, भूमिहीन श्रमिकों, कृषक मजदूरों, लघु व्यावसायियों, खुदरा व्यापारियों एवं स्वनियोजित व्यक्तियों को ऋण प्रदान करता है जिसका विस्तृत विवरण हम आगे के अध्याय में करेगें।

*****